जैविक कृषि उद्यमिता में भारतीय महिलाओं का योगदान

डॉ पी वी एस एम गौरी
कार्यकारी निदेशक और सीईओ, एसोसिएशन ऑफ इंडियन ऑर्गेनिक इंडस्ट्री, नई दिल्ली

आज भारत के साथ–साथ वैश्विक स्तर पर भी महिलाएं कैरियर के हर क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रही हैं। इसका कारण यह है कि महिलाएं अपनी जीवन यात्रा में दृढ़ रहती हैं और हार नहीं मानती हैं। महिलाएं सच्ची और सफल होने के लिए जो भी सही भूमिका निभाती हैं, उसमें अपनी ऊर्जा का योगदान देती रही हैं।

भारत में, हालाँकि महिलाएँ कृषि आय में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, फिर भी वे लंबे समय से एक अदृश्य शक्ति रही हैं। पिछली जनगणना के अनुसार, खेतों पर कम से कम 33 प्रतिशत प्राथमिक श्रमिक महिलाएँ हैं। वे उद्यमी के रूप में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उदाहरण के लिए, कृषि–संबद्ध क्षेत्रों में स्व–रोजगार उद्यमियों के रूप में महिलाओं की भागीदारी वानिकी में लगभग 25 प्रतिशत, वृक्षारोपण में 20 प्रतिशत, पशुपालन में 63 प्रतिशत, मत्स्य पालन में 14 प्रतिशत और अन्य में 25 प्रतिशत है।

मैं रुचि के वर्तमान विषय, 'जैविक खेती' पर ध्यान केंद्रित करना चाहूँगी। जैविक खेती करने वालों, उद्यमियों और यहाँ तक कि मजदूरों के रूप में कई भूमिकाएं निभाने वाली महिलाओं की संख्या बढ़ रही है।

पिछले दो दशकों के दौरान महिलाएं जैविक खेती को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि आम तौर पर लोग स्वस्थ जीवन शैली

की ओर आकर्षित हो रहे हैं। शोध और विभिन्न मीडिया रिपोर्टों की माध्यम से, हर कोई बाजार में बिकने वाली सब्जियों और फलों पर कीटनाशकों और कीटनाशकों के अवशेषों के दुष्प्रभाव से डरा हुआ है।

इसने जैविक भोजन की माँग में एक आदर्श बदलाव उत्पन्न किया है। बड़ी संख्या में मध्यम और उच्च आय वर्ग के लोग जैविक उत्पाद चुन रहे हैं। शहरों में कई महिलाएं जैविक उत्पादों के बारे में सारी जानकारी पाने के लिए गूगल पर समय व्यर्थ नहीं करतीं, जिसके परिणामस्वरूप कई महिलाएं अपने परिवार के लिए जैविक उपभोग के लिए कंटेनरों में छत पर बागवानी भी कर रही हैं।

किसानों को लाभ हो रहा है क्योंकि जैविक खेती उनके लिए टिकाऊ है। ऐसी कई महिलाएँ गैर सरकारी संगठन चला रही हैं जो गाँवों में महिलाओं को जैविक खेती अपनाकर और किसान बाजार स्थापित करके सामूहिक गतिविधि के लिए आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। ऐसे कई मॉडल कई राज्यों में बहुत प्रभावशाली हैं। इसकी प्रतिक्रिया अभूतपूर्व रही है, यहाँ मुख्य शब्द विश्वास है। जब लोगों को पता चलता है कि जो व्यक्ति बेच रहा है वह किसी भी उर्वरक या कीटनाशकों का उपयोग नहीं करता है, तो वे स्वस्थ सामान पाने के लिए प्रीमियम भुगतान करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं।

कई शिक्षित महिलाएं और महत्वाकांक्षी कृषि उद्यमी कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अपने गांवों में लौट रहे हैं। कुछ महिलाएं जैविक प्रमाणीकरण के मौजूदा पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से कुशलता विकसित करने पर विचार कर रही हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रियाएं लागू कर रही हैं कि उन्हें अपने स्टोर तक प्रमाणित उत्पाद प्राप्त हो सकें। वे आधुनिक कैफे के बारे में भी सोच सकती हैं जो विशेष रूप से केवल स्वस्थ जैविक सामग्री ही रखते और बेचते हैं। कम उम्र के लोगों को जैविक खेती के लाभों से परिचित कराने का यह प्रयास, ''जैविक आंदोलन को और बढ़ावा देगा।

https://doi.org/10.52151/aet2024481.1722

उन सभी महिलाओं को बधाई जिन्होंने समृद्ध स्थानीय जैविक कृषि व्यवसाय स्थापित किया है। सभी के लिए अगली चुनौती यह है कि अपने व्यवसाय को अगले स्तर तक कैसे पहुँचाया जाए। ब्रांडिंग, बेहतर मार्केटिंग के साथ–साथ बाजार तक पहुँच प्रमुख मुद्दे हैं।

जब भोजन आपूर्ति श्रृंखला में लंबी दूरी तय करता है, तो उसे खेत से लेकर भोजन की थाली तक ट्रेसबिलिटी प्रमाणन के साथ–साथ तीसरे पक्ष की आश्वासन प्रणाली की आवश्यकता होती है।

कई क्षेत्रों में जैविक उत्पादों को बढ़ावा देने वाली घटनाओं को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि महिलाओं ने अभी तक जिस क्षेत्र में कदम नहीं उठाया है, वह प्रमाणन निकाय की स्थापना है। एक विश्वसनीय जैविक प्रमाणन कार्यक्रम स्थापित करने के लिए विशिष्ट कौशल और वैश्विक मानकों के अनुपालन की आवश्यकता होती है। ऑडिट (निरीक्षण, सत्यापन और प्रमाणन) में तकनीकी कौशल के विकास पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

सबसे अधिक आवश्यक है कि उपभोक्ताओं में जैविक उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करना और उनके प्रति विश्वास जगाना कि केवल वास्तविक वस्तुओं का ही विपण न किया जाएगा। जैविक व्यवसाय की सफलता के लिए यह बहुत आवश्यक है।